ॐ

विश्व हिन्दू परिषद

संकटमोचन आश्रम, रामकृष्णपुरम, सेक्टर–6,नई दिल्ली–110011

विश्व हिन्दू परिषद के अन्तरराष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोक जी सिंहल का प्रेस वक्तव्य

दिनांक–23 मार्च,2010, नई दिल्ली। गंगा के अस्तित्व की रक्षा के लिए सितम्बर 2008 से अब तक साधु सन्तों, सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं विभिन्न संस्थाओं के द्वारा अनेक बार विरोध प्रदर्शन आन्दोलन किए गए और सरकार के द्वारा हर बार झूठे आश्वसनों एवं घोषणाओं के द्वारा इन आन्दोलनों को शान्त करा दिया गया, किन्तु गंगा के संरक्षण के लिए न तो कोई ठोस उपाय किए गए और न ही गंगा पर चल रही परियोजनाओं को बन्द किया गया, जिसके परिणाम स्वरूप अखाड़ा परिषद सहित सम्पूर्ण सन्त समाज एवं हिन्दू जनमानस आक्रोशित है। हरिद्वार कुम्भ में सन्तों के द्वारा किया गया धरना इसी असन्तोष की अभिव्यक्ति है। सरकार यदि अभी भी इस विषय पर कोई ठोस कदम नहीं उठाती है तो सन्तों का आक्रोश और भी बढ़ना स्वाभाविक है और उसके परिणाम स्वरूप समाज में एक व्यापक आन्दोलन खड़ा होगा, जिसका सामना कर पाना सरकार के लिए सम्भव नहीं होगा।

हम सरकार को चेतावनी देते हैं कि वह हिन्दू समाज की भावनाओं के साथ खिलवाड़ न करे तथा सन्तों की निम्न माँगों को गम्भीरता से लेते हुए उनको अविलम्ब पूरी करे।

संतों का स्पष्ट मत है कि गंगा पर निर्माणाधीन एवं प्रस्तावित सभी जल–विद्युत परियोजनाएं तत्काल प्रभाव से निरस्त की जाएं। टिहरी बांध में अवरुद्ध गंगा की अविरलता को अबाधित कर पंडित मदनमोहन मालवीय जी के साथ ब्रिटिश सरकार द्वारा किये हुए समझौते का पालन किया जाए। नरौरा बांध से 3000 क्यूसेक जल गंगा में प्रवाहित होने की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। गंगा की निर्मलता के लिए गंगा तट के प्रांतों में गंगा बेसिन रक्षा प्राधिकरण बनाया जा रहा है इसमें संतो, सामाजिक, धार्मिक संस्थाओं, सम्बन्धित नगर पालिकाओं और ग्राम समाज के लोगों को सम्मिलित कर उनके कर्त्तव्यों का निर्धारण किया जाए। गंगा के किनारे बसे सभी शहरों और कस्बों का मल–मूत्र, कचरा व प्रदूषित पानी गंगा में न डाला जाए। उसका उपयोग कृषि कार्य हेतु सुनिश्चित किया जाए। औद्योगिक इकाईयों को गंगा से पर्याप्त दूरी पर रखा जाए और उसका प्रदूषित जल गंगा में प्रवाहित न हो। संतों का यह भी स्पष्ट मत है कि विकास हम भी चाहते हैं किन्तु ऐसा विकास चाहते है जिसमें हमारे भारत राष्ट्र के आध्यात्मिक स्वरूप, समाज की श्रद्धा और हमारी सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण–संवर्धन सुनिश्चित हो और जिसका फायदा सभी को मिले। सांस्कृतिक धरोहर के विनाश की आधारशिला पर रखा गया विकास हमें नहीं चाहिए। अतः गंगा को राष्ट्रीय नदी नहीं, राष्ट्रीय धरोहर घोषित किया जाए।

सरकार 27 मार्च तक कोई ठोस कदम उठाकर संतों के मन में यह विश्वास पैदा करे कि वह गंगा के अस्तित्व की रक्षा के प्रति गंभीर है, वरना यदि संतों ने हरिद्वार कुम्भ का वहिष्कार कर दिया तो यह हिन्दू समाज को अत्यन्त मर्माहत करने वाली घटना सिद्ध होगी और इसके लिए वर्तमान हिन्दू समाज ही नहीं बल्कि भविष्य का इतिहास भी सरकार को माफ नहीं करेगा।

विश्व हिन्दू परिषद सहित हिन्दू समाज इस सम्पूर्ण घटनाक्रम में संतों के निर्देशानुसार गंगा की अविरलता एवं निर्मलता की रक्षा के लिए किसी भी बलिदान के लिए दृढ़ संकल्पित है।